तीन मज़ेदार शिकारी

निकोलाई नोसोव

चित्र: आई. सेमेनोव

हिंदी: अरविन्द गुप्ता
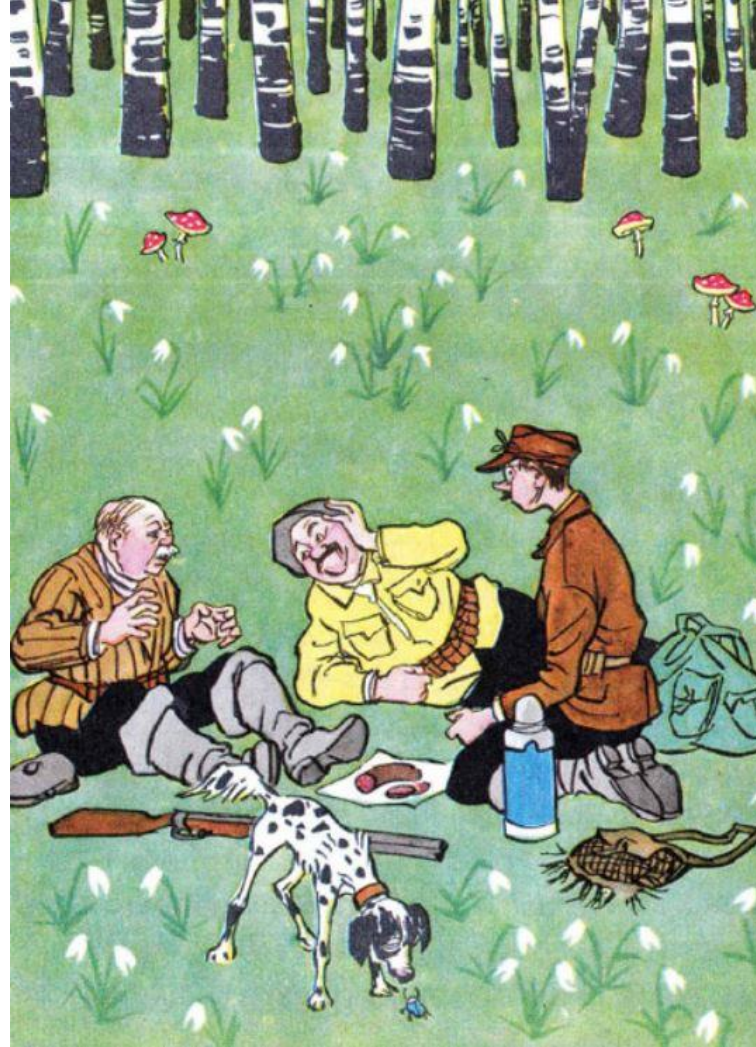
एक बार तीन मज़ेदार शिकारी थे - अंकल वान्या, अंकल फेड्या और अंकल कुज़्मा. एक दिन वे जंगल में गए. वे घंटों तक जंगल में चलते रहे जहां उन्होंने सभी प्रकार के जंगली जानवरों को देखा, लेकिन उन्होंने किसी जानवर को नहीं मारा. फिर उन्होंने आराम करने का फैसला किया. वे हरी घास पर बैठे और अपने साथ होने वाली दिलचस्प घटनाओं की कहानियाँ सुनाने लगे.

कहानी बताने वाले पहले व्यक्ति अंकल वान्या थे.

"यह सुनो," उन्होंने कहा. "यह घटना बहुत समय पहले घटी थी. सर्दियों के एक दिन मैं जंगल में गया. क्योंकि तब मैं सिर्फ एक युवा लड़का था इसलिए मेरे पास बंदूक नहीं थी. अचानक मैंने एक भेड़िया देखा. वो एक असली भेड़िया था! उसे देख मैं तेज़ी से भागने लगा. भेड़िए ने देखा होगा कि मेरे पास बंदूक नहीं थी, इसलिए उसने मेरा पीछा करना शुरू किया.

"वो भेड़िया मेरे लिए बहुत तेज़ है," मैंने सोचा.

"तभी मैंने एक पेड़ देखा और मैं उस पर चढ़ने लगा.
भेड़िए ने मुझमें अपने दाँत गड़ाने की कोशिश की,
लेकिन वो केवल मेरी पतलून ही फाड़ पाया.

“मैं पेड़ पर चढ़ गया और एक शाखा पर बैठ गया. मैं डर से काँप रहा था, जबकि भेड़िया नीचे जमीन पर बैठा था. वो मेरी ओर देख रहा था और अपने ओंठ चाट रहा था.

"कोई बात नहीं, मैंने सोचा. मैं शाम तक यहीं रुकूँगा. जब भेड़िया सो जाएगा, तो मैं पेड़ से नीचे उतरकर भाग जाऊँगा?

"लेकिन शाम तक वहां एक और भेड़िया आ गया और फिर वे बारी-बारी से निगरानी करने लगे. जब एक सोता, तब दूसरा पहरा देता था ताकि मैं भाग न जाऊँ. थोड़ी देर बाद तीसरा भेड़िया आ गया. फिर एक और.... अंत में पेड़ के नीचे भेड़ियों का एक पूरा झुंड जमा था. वे वहां बैठे मुझ पर दांत पीस रहे थे और मेरे गिरने का इंतज़ार कर रहे थे.

"सुबह होते-होते कड़ाके की ठंड हो गई. लगभग चालीस डिग्री शून्य से नीचे. मेरे हाथ और पैर अकड़ गए. मैं शाख पर अपना संतुलन खो बैठा और नीचे गिर गया. एक धमाका और दुर्घटना हुई! भेड़ियों का झुंड मुझ पर झपटा, और तभी मैंने ज़ोर से कुछ चटकने की आवाज़ सुनी.

मैंने सोचा, "ज़रूर मेरी ही हड्डियाँ चटक रही होंगी."

"तब मुझे एहसास हुआ कि मेरे नीचे की बर्फ धंस गई थी. मैं लड़खड़ाता हुआ नीचे गया और फिर एक मांद में जा गिरा. मुझे पता चला कि वो एक भालू की मांद थी. भालू ब्रुइन जाग गया. वो घबराकर अपनी मांद से बाहर निकला, उसने भेड़ियों को देखा और उसने उनपर आक्रमण किया. कुछ ही समय में भालू ने उन सभी भेड़ियों को खदेड़ दिया.

"फिर मैंने अपनी हिम्मत जुटाई और मांद से बाहर झाँका.

"क्योंकि भेड़ियों का कोई नामो-निशान नहीं था, इसलिए मैं अपने पैरों पर खड़ा हो गया और घर की ओर भागा. माँ ने मेरी पतलून में हुए छेद को रफ़ू कर दिया, इसलिए अब आप आप उसे मुश्किल से देख पाएंगे. और जब पिताजी को मालूम पड़ा कि मेरे साथ क्या हुआ था तो उन्होंने तुरंत मेरे लिए एक बंदूक खरीद दी, ताकि मैं फिर कभी बंदूक के बिना जंगल में न घूमूं. तब मैं पहली बार शिकारी बना."

अंकल वान्या की भेड़ियों वाली कहानी पर अंकल फेड्या और अंकल कुज़्मा हँसे. फिर अंकल फेड्या ने अपनी कहानी शुरू की.

"मुझे भी एक बार एक भालू ने बड़ी बुरी तरह से डरा दिया. वो गर्मियों का समय था. एक दिन मैं जंगल में गया. पर गलती से मैं अपनी बंदूक घर पर ही भूल गया. अचानक मैंने एक भालू को अपनी ओर आते हुए देखा. मैं अपने पैरों पर तेज़ी से भागने लगा. भालू ने मेरा पीछा किया. मैं तेजी से भागा, लेकिन भालू और भी तेज भागा. मैं उसे अपने पीछे हांफते हुए सुन सकता था. इसलिए मैं घूमा, और फिर मैं अपनी टोपी खींचकर उस पर फेंक दी.

"भालू एक पल के लिए रुका, उसने टोपी को सूँघा
और फिर से मेरा पीछा करना शुरू कर दिया.

"मुझे पता था कि वो जल्द ही मुझे पकड़ लेगा. मुझे अभी भी बहुत लंबा रास्ता तय करना था. इसलिए मैंने फिर दौड़ते हुए अपनी जैकेट निकाली और वो भी भालू पर फेंक दी.

मैंने सोचा, "इससे वो एक या दो मिनट के लिए ज़रूर रुकेगा."

"भालू ने अपने पंजों से जैकेट के टुकड़े-टुकड़े कर दिए. उसने देखा कि जैकेट में खाने के लिए कुछ भी नहीं था. इसलिए उसने दुबारा से मेरा पीछा किया. फिर मैंने अपनी पतलून और जूते भी उसकी ओर फेंके. इसके अलावा मैं और कुछ नहीं फेंक सकता था. अब किसी भी तरह मुझे अपनी जान बचानी थी.

"मैं अपनी बनियान और पैंट पहने जंगल से बाहर भागा. मेरे आगे एक नाला था जिसके ऊपर एक पुल था. जैसे ही मैंने पुल पार किया, मैंने एक ज़ोर से चटकने की आवाज सुनी. मैंने पुल को टूटते हुए और भालू को तेज धमाके के साथ पानी में गिरते हुए देखा.

'तुम्हें अच्छा सबक मिला, बूढ़े शैतान,' मैंने सोचा, 'अब तुम निर्दोष लोगों को नहीं सताओगे.'

"पुल के नीचे पानी बहुत गहरा नहीं था. भालू किनारे पर चढ़ गया. उसने खुद को जोर से झटका और वो फिर वापस जंगल में चला गया.

" 'ठीक है, अंकल फेड्या,' मैंने खुद से कहा. 'मैंने उस भालू को अच्छी तरह बेवकूफ बनाया. लेकिन अब मैं घर वापिस कैसे जाऊंगा? लोग जब मुझे बिना कपड़ों के देखेंगे तो फिर वे मुझ पर मूर्खतापूर्ण तरीके से हंसेंगे.'

"मैंने झाड़ियों में छिपने और अंधेरा होने पर ही घर जाने का फैसला किया. इसलिए मैं शाम तक झाड़ियों में छिपा रहा, फिर मैं बाहर निकला और घर की ओर चला. जब भी मैंने किसी को अपनी तरफ आते हुए देखा तो फिर मैं किसी अँधेरे कोने में छिप जाता और वहां अपनी किस्मत को कोसता था."
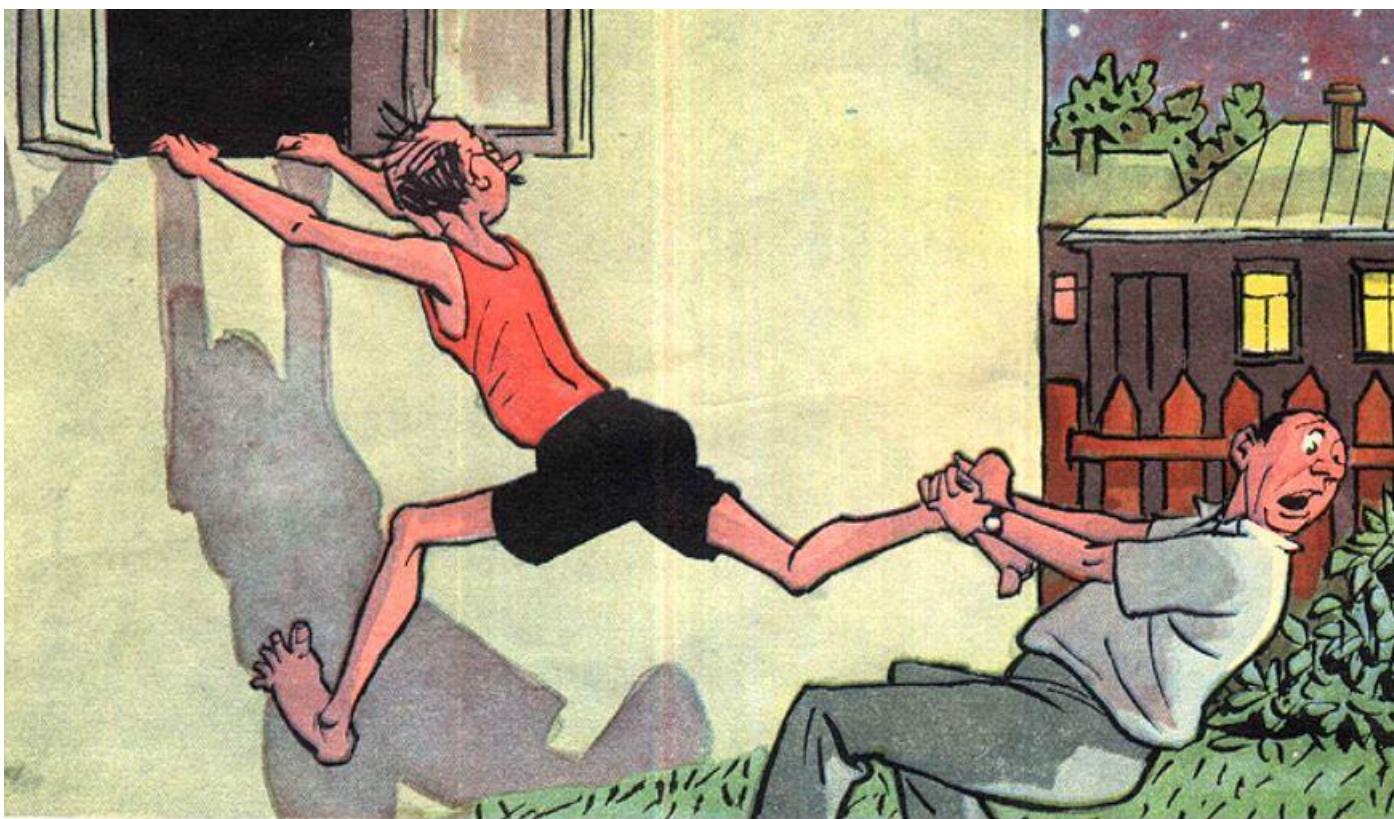
"आखिरकार मेरा घर आ गया. मैंने दरवाज़ा खोलने के लिए हर जगह चाबी ढूंढी, लेकिन चाबी मुझे कहीं नहीं मिली. चाबी मेरी जैकेट की जेब में थी. और मैंने अपनी जैकेट भालू की ओर फेंक दी थी. मुझे ध्यान से पहले अपनी चाबी निकाल लेनी चाहिए थी.

"मैं क्या कर सकता था? मैंने दरवाज़े को जोर से हिलाकर उसे खोलने की कोशिश की, लेकिन दरवाज़ा बहुत मज़बूत था.

'मैं बाहर ठंड में तो रात नहीं बिता सकता,' मैंने सोचा.

"फिर मैंने एक खिड़की का शीशा तोड़ा और फिर अंदर चढ़ने लगा.

"अचानक किसी ने मेरे पैर पकड़ लिए और वो पूरी ताकत से चिल्लाया:

" 'चोर पकड़ो! चोर पकड़ो!'
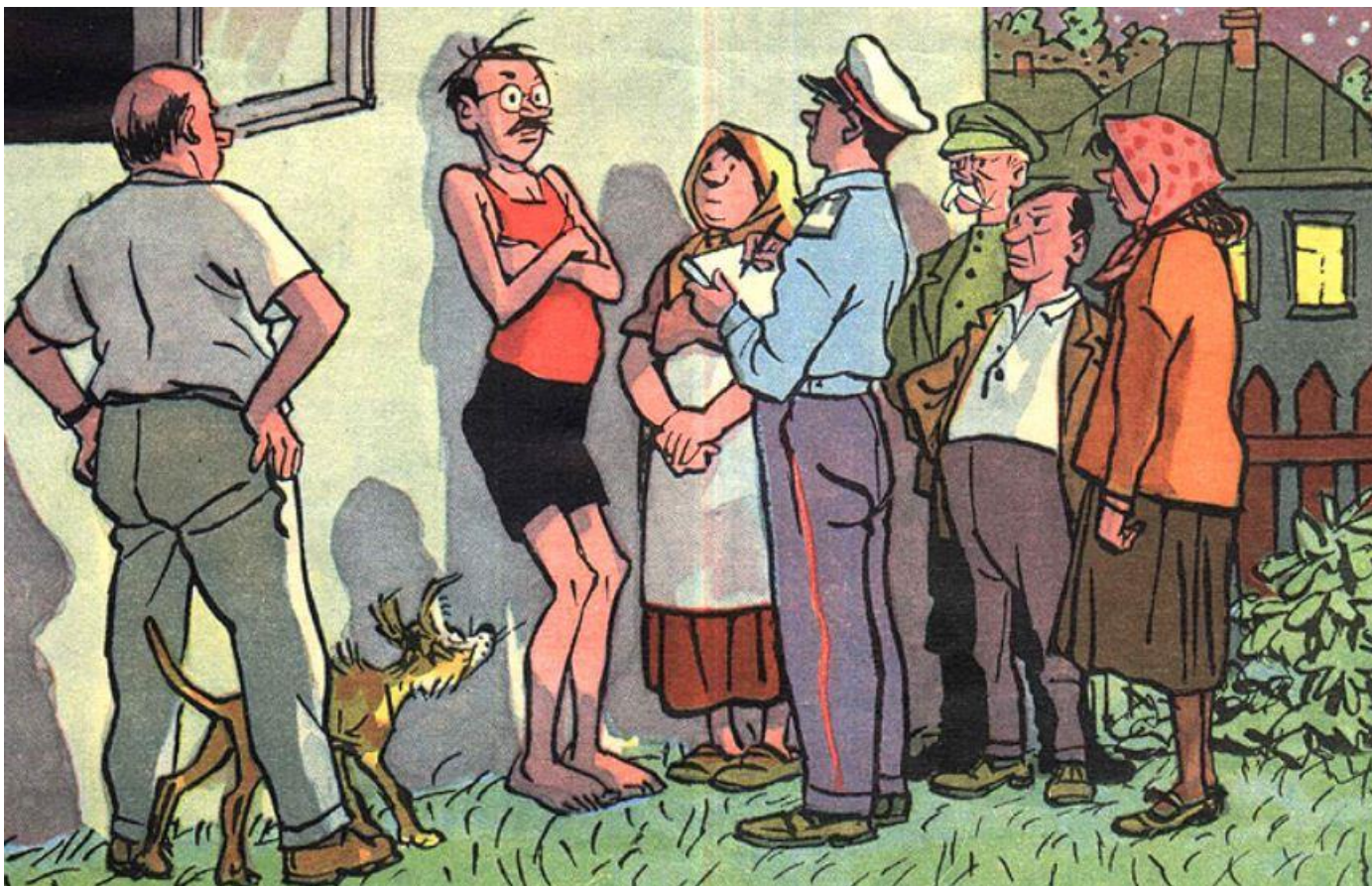
"लोग तुरंत दौड़कर आए.

" 'उसे पकड़ो! वो एक चोर है. वो खिड़की तोड़कर घर में घुस रहा था!' लोग चिल्लाए.

"'उसे पुलिस-स्टेशन ले जाओ,' दूसरों ने चिल्लाकर कहा.

'मुझे पुलिस-स्टेशन ले जाने की कोई जरूरत नहीं है, मेरे प्यारे दोस्तों,' मैंने कहा. 'यह मेरा अपना घर है.'

" 'उस चोर की बात पर ध्यान मत दो, दोस्तों,' जिसने मुझे पकड़ा था वो चिल्लाया. 'मैं काफी समय से उसे देख रहा हूं. पहले वो अंधेरे कोने में छिपा था. शुरू में उसने दरवाजा तोड़ने की कोशिश की, फिर वो कांच तोड़कर खिड़की से घर में घुसने लगा.'

"तभी एक पुलिसमैन आया और फिर सभी लोग उसे बताने लगे कि क्या हुआ था.

पुलिसमैन ने मुझसे कहा, "ज़रा मुझे अपना पहचान पत्र दिखाओ."

"'मेरे पास कोई पहचान पत्र नहीं है,' मैंने पुलिसमैन से कहा. 'भालू ने उसे खा लिया है.'

" 'देखो, यह बकवास बंद करो! भला भालू पहचान पत्र कैसे खा सकता है?'

"मैं लोगों को समझाना चाहता था, लेकिन किसी ने मेरी बात नहीं सुनी.

"तभी मेरे पड़ोसी आंटी दाशा शोर सुनकर अपने घर के बाहर आईं. उन्होंने मुझे देखा और कहा:

"'उन्हें जाने दो. वो हमारे पड़ोसी अंकल फेड्या हैं. वो सच में इसी घर में रहते हैं.'

"पुलिसवाले ने उनकी बात पर विश्वास किया और फिर मुझे जाने दिया.

"अगले दिन मैंने अपने लिए नया सूट, टोपी और जूते खरीदे. और फिर मैं अपने अच्छे नए कपड़ों में खुशी से रहने लगा."

अंकल वान्या और अंकल कुज़्मा, अंकल फेड्या के कारनामों पर हँसे. फिर अंकल कुज़्मा ने कहा:

"मेरा भी एक भालू से पाला पड़ा था. वो सर्दी का मौसम था. मैं जंगल में गया, मैंने एक भालू को देखा और अपनी बंदूक से उसे गोली मारी. एक धमाका हुआ और भालू जमीन पर गिर पड़ा. फिर मैंने भालू को अपनी स्लेज पर लादा और फिर घर चल दिया. भारी भालू को गाँव तक स्लेज पर घसीटना एक कठिन काम था. लेकिन गाँव के लड़कों ने उसमें मेरी मदद की.

"फिर मैं भालू को घर लाया और मैंने उसे आँगन में छोड़ दिया. मेरे छोटे बेटे इगोर ने उसे देखा और आश्चर्य से अपना मुँह बनाया.

"लेकिन मेरी पत्नी ने कहा:

“ 'अच्छा है! हम भालू की खाल उतारकर तुम्हारे लिए भालू की खाल का कोट बना देंगे.'

"फिर मेरी पत्नी और बेटा चाय पीने चले गए. मैं भालू की खाल उतारने ही वाला था, तभी हमारा कुत्ता ट्रिकस्टर यार्ड में घुसा और उसने भालू के कान में अपने दाँत गड़ा दिए. भालू उछल पड़ा और गुर्राने लगा. भालू मरा नहीं था. वो केवल मेरी गोली से डरकर बस स्तब्ध हो गया था.

"ट्रिकस्टर डर कर अपने कुत्ते के घर में भाग गया. फिर भालू ने मुझ पर हमला कर दिया. मैं अपने पैरों पर खड़ा हुआ. फिर मैंने मुर्गीघर की सीढ़ी देखी और मैं उसकी छत पर चढ़ गया. भालू भी मेरे पीछे-पीछे छत पर चढ़ा. फिर हम दोनों धड़ाम से मुर्गीघर में गिर गए. उससे मुर्गियाँ बहुत डर गईं. वे पागलों की तरह कुड़कुड़ाने लगीं और सभी दिशाओं में उड़ने लगीं और अपने पंख फड़फड़ाने लगीं.

"मैं मुर्गीखाने से बाहर निकला और अपने घर की ओर दौड़ा. भालू ने मेरा पीछा किया. मैं कमरे में गया, और भालू भी मेरे पीछे-पीछे आया. फिर मैं फिसला और उस टक्कर से मेज गिर गई. सारे बर्तन फर्श पर गिर गए और उनके साथ समोवर भी. इगोर, डर के मारे सोफे के नीचे छिप गया.

"यह देखकर कि बचने का कोई रास्ता नहीं है, मैं बिस्तर पर गिर पड़ा और मैंने अपनी आँखें कसकर बंद कर लीं. भालू मेरे पास आया, उसने मुझे एक पंजे से हिलाया और दहाड़ा:

" 'जल्दी उठो! उठो!'

"जब मैंने अपनी आँखें खोलीं तो मैंने देखा कि वो मेरी पत्नी थी.

" 'उठो,' पत्नी ने कहा. 'दिन हुए काफी समय बीत गया है. और आज तुम शिकार पर जाने वाले थे.'

"फिर मैं उठा और शिकार करने चला गया, लेकिन उस दिन मुझे कोई और भालू नहीं दिखाई दिया. उसके बाद से मैं हमेशा खुश रहा. मैंने पत्तागोभी के सूप के साथ रोटी खाई और सबको अपना अच्छा नया सूट दिखाया!"

अंकल वान्या और अंकल फेड्या इस कहानी पर खूब हंसे.

और अंकल कुज़्मा भी उनके साथ-साथ हँसे.

फिर वे तीनों घर चले गए.

"हमने शिकार करते हुए एक बहुत अच्छा दिन बिताया, क्यों है ना? हमने एक भी जंगली जानवर को नहीं मारा, लेकिन हमने अपना समय बहुत आनंदपूर्वक बिताया."

"मुझे जानवरों को मारना पसंद नहीं है," अंकल फेड्या ने कहा, "उन सभी छोटे खरगोशों, गिलहरियों, हाथी और लोमड़ियों को, जंगल में शांति से रहना चाहिए. किसी को उनका शिकार नहीं करना चाहिए."

"और पक्षियों को भी शांति से रहना चाहिए," अंकल कुज़्मा ने कहा. "जानवरों और पक्षियों के बिना जंगल एक उदास जगह हो जाएगी. उनमें से किसी का भी शिकार नहीं किया जाना चाहिए. हमें जानवरों से प्रेम करना चाहिए, उन्हें मारना नहीं चाहिए."

देखो वे तीनों कितने अच्छे और मज़ेदार शिकारी थे!